

Abweichende Lesungen der kürzeren Recension.

Siebentes Buch.

Khanda 8, Linie 4. यच्च दार्ष्टिक्यविक्रमग्निकर्मैव तद्यथास्य

- | | | |
|-----|--|----------------------------------|
| 8, | 6. | विभक्तस्तुतिम् |
| 9, | 4. | Fehlt आदित्यः |
| 10, | 3. | या च का चिद् बल ⁰ |
| » | 5. | सोमो वायुना च पूषा |
| 11, | 3. | रसधारणं यत्तु किं |
| 12, | 1. | Fehlt स्तोमः स्तवनात् |
| 13, | 1. | जलचलगति ⁰ |
| » | 6. | Fehlt इन्द्राय वृत्रतुर |
| 15, | 3. | यज्ञस्य देवो |
| 16, | 3. | Fehlt वन्दितव्यो |
| 17, | 7. | कर्माभिर्ह्य ⁰ |
| 18, | 3. | महान्तं चात्मानम् |
| 19, | 2. | पशूनविन्दत तज्ज्ञात ⁰ |
| 20, | zwischen 19 und 20 erscheint in dieser Recension | |

die folgende Einschreibung:

ज्ञातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥